Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

# पंजाब के संगीतकारों एवं संगीत निर्देशकों का परिवर्तित स्वरूप

**SUNITA RANI[1] AND DR. SHARUTI HORA[2]**

Research Scholar, Dept. of Music, Panjab University, Chandigarh
Associate Professor P.G.G.C.G. Sector-11

## सारांश

पंजाबी संगीत जगत में कालंतर दौरान कई ऐसे प्रसिद्ध संगीत निर्देशक हुए हैं जिन्होंने अपनी सूझ-बूझ और तजुर्बे से अनेकों मधुर धुनों को संगीत जगत की गोद में डाल कर पंजाबी संगीत निर्देशन को एक विकसित रूप प्रदान किया है। इस शोध-पत्र में पंजाब के ऐसे ही दो प्रसिद्ध संगीत निर्देशकां जैसे- चरनजीत आहुजा और जतिंदर शाह के योगदान पर चर्चा की गई है। चरनजीत आहुजा ने अपने निर्देशन के शुरुआती दौर से अब तक पंजाब के प्रसिद्ध गायकों जैसे- गुरदास मान, सुरिंदर छिंदा, सरदूल सिकेदर, हरमनन मान, साबर कोटी, हंस राज हंस इत्यादि के गीतों को लोक प्रसिद्धि दिलाने में आपनी अहिम भूमिका निभाई। आपके संगीत निर्देशन में एक खास बात यह रही है कि जब भी इन गायकां के गीतों को सुना जाता है तो गीत के साथ-साथ संगीतकार का भी वर्णन आवश्य होता रहा है। इसी प्रकार से जतिंदर शाह जी ने भी पंजाबी संगीत में अधिक गीतों में बहुत खूबसूरत निर्देशन किया। आपके समय में संगीत वैज्ञानिक उपकरणों का अधिक उपयोग होने लगा था। आप ने अपने सांगीतिक सफर में कई हिन्दी और पंजाबी फिल्मों में भी संगीत निर्देशन किया। अंतः में चरनजीत आहुजा और जतिंदर शाह जी के परिवर्तित स्वरूप को ब्यान करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द : चरनजीत आहुजा, जतिंदर शाह, संगीत निर्देशक, पंजाब।

शोध-प्रविधि: विषय से संबंधित समस्त कार्य वर्णनात्मक, गुणात्मक विधि से किया गया है। सम्पूर्ण दत्त-सामग्री को साक्षात्कार व प्रशनावली के माध्यम से एकत्र किया गया है।

## परिचय

भारतीय संगीत से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि भारतीय संगीत परंपरा में निर्देशन शब्द बहुत अधिक पुराना नहीं है। संगीत निर्देशन शब्द पश्चिम संगीत की ही देन है। किसी भी भारतीय ग्रन्थ में 'संगीत निर्देशक एवं 'निर्देशन शब्द की चर्चा नहीं मिलती। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि भारतीय संगीत जगत में निर्देशन को संगीतकार या संगीतज्ञ के नाम से जाना जाता रहा हो। शायद इसलिए भारतीय शास्त्रों में संगीत निर्देशन शब्द नहीं मिलता। यहां यह कहना भी गलत होगा कि भारतीय संगीत, संगीत निर्देशन की भूमिका से विहीन रहा है। वास्तविक्ता यह है कि ''भारत में संगीत की रचना और निर्देशन प्रायः एक ही व्यक्त करना है। इस लिए यहां संगीत निर्देशक को संगीत रचयिता और संगीत अरेंजर के गुणों से पूर्ण मान लिया जाता है।[1]

एक गीत को रिकॉर्ड करने में गीतकार के इलावा गायक, वाद्यकार, सह-गायक, तकनीशियन, संगीत निर्देशक आदि सम्मलित होते हैं। गीत में सभी कलाकार अपनी भूमिका को बहुत अच्छे से निभाते हैं लेकिन संगीत निर्देशक की भूमिका सब से अहम होती है। संगीत निर्देशक और 'संगीत निर्देशन शब्द आधुनिक काल की महत्त्वपूर्ण संरचना है या फिर ऐसा भी कहा जा सकता है कि इसे पश्चिम संगीत के द्वारा भारत में लाया गया है। चाहे इसका नाम आधुनिक युग की ही देन है लेकिन अगर हम हिन्दुस्तानी संगीत के इतिहास की बात करें तो इसके खास तत्व वैदिक काल में ही प्राप्त होते हैं। जिनकी विशेष जानकारी हमें वेदों से प्राप्त होती है। ऐसा माना जा सकता है कि उस समय में संगीत निर्देशन की तकनीक अधिक विकसित नहीं थी और संगीत निर्देशन कार्य करने वाले कलाकार को संगीत निर्देशक नाम की जगह किसी अन्य शब्द की संज्ञा से पुकारा जाता रहा हो। नाट्य-शास्त्र में भी संगीत निर्देशन के तत्व प्राप्त होते हैं। एक सफल

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

संगीत निर्देशक में काव्य रचना का ज्ञान, (लय, ताल, स्वर) का ज्ञान, मैलोडी व हार्मनी भाव का ज्ञान, भाषा व रस का ज्ञान, लोक रूचि का ज्ञान, तकनीकी कौशल, उचित शिक्षक और व्यावहारिक संबंध में निपुणता, धैर्य व सहनशीलता, स्पष्टता, प्रदर्शन कौशल विभिन्न वाद्य यंत्रों की तकनीकी का सामान्य ज्ञान इत्यादि गुण होना अति आवश्यक होता है। पंजाबी संगीत जगत में कई ऐसे प्रसिद्ध संगीत निर्देशक हुए हैं। पंजाबी संगीत जगत में कई ऐसे प्रसिद्ध संगीत निर्देशक हुए हैं जिन्होंने अपनी तीव्र समझ के द्वारा मधुर धुनों को संगीत जगत की गोद में डाल कर पंजाबी संगीत निर्देशन को एक विकसित रूप प्रदान किया है जैसे- चरनजीत आहुजा और जतिंदर शाह ऐसे संगीतकार हुए हैं जिन्होंने पंजाबी संगीत और संस्कृति को पंजाब से बाहर दुनिया भर में लोक-प्रसिद्धि दिलाई है।

## चरनजीत आहुजा

"चरनजीत आहुना जी का जन्म रोहतक शहर (हरियाणा) में 1953 को हुआ। इनके पिता जी का नाम श्री वीरभान आहुजा और माता सुमित्रा देवी है। इन्होंने रोहतक शहर में ही जैन हाई स्कूल जो जैन धर्म से संबंधित था, वहीं से ही 10वीं कक्षा की शिक्षा प्राप्त की। इस स्कूल का आप की संगीत शिक्षा प्राप्त करने एवं जिन्दगी में एक सफल इंसान बनने में अधिक योगदान रहा है। चरनजीत आहुना जी जब पाँचवीं कक्षा में थे तो इन्होंने शिक्षा के साथ-साथ विधिवत रूप से रोहतक में ही पंडित कुंदल लाल भूत जी से शास्त्रीय संगीत की तालीम लेनी प्रारम्भ कर दी थी। वह पटियाला घराने के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक थे।"[2] आप पंडित जी से शास्त्रीय संगीत की तालीम लिया करते थे और हारमोनियम पर स-पा संवाद, स-मा संवाद तथा राग के हिसाब से अभियास करते थे।

आप ने स्कूल शिक्षा प्राप्त करते समय ही मैंडोलियन सिखना अर्थात इसकी शिक्षा लेनी प्रारम्भ की दी थी। 1973 ई. में आप ने दिल्ली H.M.V. कम्पनी में बातौर मैंडोलिन वादक के रुप में कार्य करना शुरू कर दिया था। आप ने उस समय के प्रसिद्ध संगीत निर्देशकों के साथ भी कार्य किया। जैसे- पंडित शिव राम, श्री के.एस. नरुला, श्री के. पन्ना लाल और महिंदर इत्यादि। 'आपके द्वारा सर्वप्रथम हरियाणवी गीत रिकॉर्ड किया गया था। उस समय E.P. रिकॉर्डस होते थे।

सर्वप्रथम आप ने पंजाबी भाषा में उस समय के प्रसिद्ध गायक हरचरन गरेवाल और सुरिंदर कौर जी के गीत 'अद्दी अद्दी रात तक में पड़दी' को रिकॉर्ड किया'[3] आपके संगीत निर्देशन के समय गीत में 'छड' के स्थान पर (स्थाई के बाद जो संगीत बजता था वह ना-मात्र ही होता था और जो संगीत बजता था उसे 'छड बजना कहते थे। आप ने सर्वप्रथम गीत में 'छड' के स्थान को वाद्य-वृंद कहना प्रारंभ किया। इसके अतिरिक्त जब गायक गायन कर रहा होता था, उसके पीछे बेस गिटार और अन्य वाद्य बजाने से खालीपन भर जाता था वह भी आप ने ही प्रारंभ किया। पंजाबी संगीत गायन में पश्चिमी वाद्य का प्रयोग सर्वप्रथमत आप के द्वारा ही किया गया। 1985 ई. में आप H.M.V.कंपनी से अलग होकर खुद संगीत निर्माता बनकर कैसेट रिलिज़ करने लग पड़े। 1992 में आप ने दिल्ली में 'सांगीतिका' रिकॉर्डिंग स्टूडियो बनवाया। आप को 'संगीत सम्राट' चरनजीत आहुजा के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा।

आहुजा जी ने 25-30 पंजाबी फिल्मों में भी कार्य किया है। आप ने पंजाब के प्रसिद्ध गायक और गायकों को रिकोर्ड किया, जैसे लाल चन्द यमला जट्ट, सुरिंदर कौर, हरचरन चीमा, अमर सिंह चमकीला, आसा सिंह, कुलदीप मानक, सुरिंदर शिंदा, हंस राज हंस, सरदूल सिकंदर, गुरदास मान, हरभजन मान, साबर कोटी, दुरगा रंगीला, सतविंदर बुग्गा, कमलजीत, परमिंदर संधू, पम्मी बाई इत्यादि। आप संगीत निर्देशक के इलावा एक अच्छे संगीत कम्पोज़र भी रहे हैं। आप में विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रों को बजाने का हुनर भी देखा गया है। जैसे- हारमोनियम, मैंडोलिन आदि।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

**मान-सम्मान**

''1989 में 'मॉडल इंट्रप्राइज, टोरांटो कनाडा की तरफ से पंजाबी भाषा में सराहनीय कार्य के तौर पर 'पंजाब की आवा' नाम से सम्मान सहित 'The King Of Punjabi Music' से संबोधित किया गया है।''[4]

पंजाबी सेटेलाईट चैनल लिशकारा द्वारा 'लाईफ टाईम अचीमेंट अवर्ड' दिया गया।

## जतिंदर शाह

जतिंदर शाह का जन्म 10 जनवरी को अमृतसर में हुआ। आप कुछ समय अमृतसर रहने के बाद चंडीगढ़ आ गए। आप ने स्कूल और कॉलेज़ की शिक्षा चंडीगढ़ में ही प्राप्त की, आप को संगीत से लगाव अपने स्कूल और कॉलेज़ के समय से ही था। आप ने अपने कॉलेज़ के समय 1997 को 'Mr. Denial' से संगीत की शिक्षा लेनी प्रारम्भ की और एक वर्ष तक उनसे संगीत शिक्षा प्राप्त की। 1998 को आप ने वरिंदर बच्चन जी से शिक्षा लेनी प्रारंभ की और आप लगभग पाँच वर्ष तक उनसे संगीत शिक्षा ग्रहण करते रहे। इसके बाद आप ने सन् 2002 में शास्त्रीय गायक 'बी.एस. नारंग' जी से संगीत की तालीम लेनी प्रारम्भ की।

इसके अतिरिक्त आपने जींद घराना के सारंगी वादक 'मोमिन खान' जी से भी संगीत शिक्षा ग्रहण की। इस प्रकार आप ने लम्बे समय तक संगीत ज्ञान प्राप्त किया और संगीत के क्षेत्र में समय-समय पर अपना योगदान देते रहे। आपने बहुत ही कम समय में पंजाबी और हिन्दी सिनेमा की कई फिल्मों में संगीतकार के रूप में अपना योगदान दिया। आपने पश्चिमी संगीत और सूफी संगीत के मिश्रण से मार्डन संगीत की रचना भी की है। सन् 2002 में H.M.V. और T-Series की Telly Films में आप ने कार्य किया। आप ने कई पंजाबी गायकों को रिकॉर्ड किया और कई कैसेटस बाज़ार में सन् 2004-2005 में आ चुकी थी।

आप ने 80 से अधिक पंजाबी, हिन्दी फिल्मों का संगीत निर्देशन किया है। पंजाब के कई प्रसिद्ध कलाकारों के साथ काम किया। जैसे- गुरदास मान, दिलजीत दोसांझ, अमरिंदर गिल्ल, गिप्पी गरेवाल, गुरशब्द, हैपी रायकोटी, अैमी विर्क, सतिंदर सरताज, सुनिधी चौहान (बालीवुड गायका) इत्यादि। ''सन् 2015 में गुरदास मान और दिलजीत दौसांझ की फिल्म 'की बन्नू दुनिया दा' में आप पहली बार किसी गीत में पर्दे के सामने आए।''[6] यह गीत बहुत ही प्रचलित हुआ। आज के समय में सब कुछ डिज़ीटल होने के कारण गीत को रिकॉर्ड करना बहुत आसान हो चुका है। वाद्ययंत्रों को कंप्यूटर के द्वारा रिकोर्डिंग में सम्मलित किया जाने लगा।

इसके अतिरिक्त आप ने यह भी बताया के आप-अपने गीतों में रिकोर्डिंग के समय जहाँ पर वाद्य की आवश्यकता हो वहाँ वाद्य को ही प्रयोग करते हैं और यह भी प्रयास करते हैं कि अधिक से अधिक वाद्ययंत्रों का ही प्रयोग किया जाए। जिस प्रकार से आधुनिक समय में वाद्ययंत्रों की संभाल भी हो सके। आप कई प्रकार के वाद्ययंत्रों बजाने में भी कुशल हैं। जैसे : तुम्बी, ढोल व तबला आदि। एक अच्छे संगीतकार के रूप में आप को कई बार सम्मानित भी किया गया है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

## संगीतकारों का परिवर्तित स्वरूप

**चरनजीत आहुजा**

**गायकों के गीतों के विषय :** कई दशक पूर्व गीतों के विषय, सामाजिक, धार्मिक इत्यादि जीवन को प्रस्तुत करते थे। जैसे- लोक-विश्वास, रीती-रिवाज, धार्मिक, सामाजिक रिश्तों पर आधारित गीत अधिक मिलते थे। संगीतकार और गायक दोनों मिलकर गीतों के विषय का चयन करते थे। अधिकतर संगीतकार ही संगीत को कंपोज भी खुद ही करते थे।

**रिकोर्डिंग सिस्टम** : पंजाबी संगीत में रिकॉर्डिंग सिस्टम के शुरुआत में गीतों की रिकॉर्डिंग गायक, वाद्यकार और संगीतकार एक साथ मिलकर करते थे। आज के समय की तुलना में संगीतकारों को गीत को रिकॉर्ड करना बहुत मुश्किल हुआ करता था, क्योंकि उन्हें लम्बे समय तक अभ्यास करना पड़ता था और अभ्यास करते समय गायक, वाद्यकार और संगीतकार तीनों का उपस्थित होना आवश्यक हुआ करता था।

**अच्छे वाद्यकार** : चरनजीत आहुजा जी एक अच्छे संगीतकार होने के साथ-साथ एक अच्छे वाद्यकार भी है। उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत एक अच्छे वादक के रूप में की थी। वह अपने समय के प्रसिद्ध गायकों के साथ अच्छे वाद्यकार की भूमिका में भी रहे हैं। जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह एक प्रसिद्ध संगीतकार होने के साथ-साथ पूर्व में अच्छे वाद्यकार रह चुके हैं।

**सुलझे हुए इंसान** : आप ने अपने समय के जिन गायकों को रिकॉर्ड किया वह गायक ना केवल लोकप्रिय हुए बलिक पंजाब के लोक गायकों में अपना नाम सम्मलित करने में भी सफल हुए। जैसे- हंस राज हंस, गुरदास मान, सरदूल सिकंदर, सुरिंदर शिंदा आदि।

**जतिंदर शाह**

**गायकों के गीतों के विषय** : पहले समय में गायक और संगीतकार की मौजूदगी में गीत की धुन तैयार की जाती थी। आज के समय में गायक अपनी पसंदिदा धुन संगीतकार को बताकर अपने गीत को रिकार्ड करवा लेते हैं, लेकिन अधिकतर संगीतकार खुद ही संगीत निर्देशन करते हैं। ऐसा केवल वैज्ञानिक उपकरणों के कारण ही संभव हो पाया है।

**गीतों के इलावा फिल्मों में अधिक संगीत निर्देशन :** जतिंदर शाह जी ने अपने सांगीतिक सफर में गीतों के इलावा फिल्मों 'पंजाबी व हिन्दी' में अधिक संगीत निर्देशन किया है। आधुनिक पंजाबी संगीत के प्रसिद्ध संगीतकार भी हैं। इन्होंने अपने संगीत के द्वारा संगीत जगत और लोगों के दिलों राज़ किया है।

**रिकॉर्डिंग सिस्टम** : आधुनिक समय में गीतों को रिकॉर्ड करना पुराने समय की तुलना में आसान हो गया है। जैसे- संगीतकार को गायक और वाद्यकार दोनों को एक साथ रिकॉर्ड नहीं करना पड़ता, वह अपनी जरूरत के अनुसार गाए हुए गीत का संगीत तैयार कर सकता है।

**आधुनिक तकनीक :** आधुनिक समय में वैज्ञानिक उपकरणों के द्वारा गीतों को रिकॉर्ड करना आसान हो चुका है। पहले जहाँ एक गीत को रिकॉर्ड करने के लिए विभिन्न वाद्ययंत्रों और अधिक वाद्यकारों की आवश्यकता होती थी, वहीं आज आधुनिक तकनीक के कारण केवल एक या दो वाद्ययंत्रों के द्वारा गीत को आसानी से रिकॉर्ड किया जा सकता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

## निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि पंजाबी संगीत जगत में चरणजीत आहुजा और जतिंदर शाह, ऐसे संगीत निर्देशक हुए हैं, जिन्हों ने समय-समय पर पंजाबी संगीत को उच्चाईओं तक पहुंचाया है। इन्होंने पंजाबी संगीत के द्वारा पंजाबी कलाराग एवं पंजाबी भाषा को देशों-विदेशों में लोकप्रसिद्वि दिलाई है। इनके द्वारा बनाया गया संगीत, आज लोक-संगीत के रूप में धारण होते हुए प्रतीत होता है। यह इन संगीतकारों की एक विशेषता है जो दूसरे संगीतकारों से इनको भिन्न करती है।

## संदर्भ

1. बसंत, संगीत विशारद, संगीत कार्यलय हाथरस, उत्तर प्रदेशए 2015, पृष्ठ-621
2. चरनजीत आहुजा जी से हुई भेंट वारतालाप, तिथि : 08-06-2015
3. चरनजीत आहुजा जी से फोन पर हुई वारतालाप, तिथि : 10-06-2015
4. सचिन आहुजा जी से हुई भेंट वारतालाप, तिथि : 05-05-2016
5. जतिंदर शाह जी से फोन पर हुई वारतालाप, तिथि : 10-11-2021